* ओ३म् *

शुद्धि और संगठन

रचयिता:--

श्री पं० जनमेजय विद्यालङ्कार

आयुर्वेद शास्त्री-वैद्य शिरोमणि

प्रथम संस्करण १००० } सं० १९८१ १ जनवरी १९२५ ई० { मूल्य -)॥

* ओ३म् *

शुद्धि और संगठन
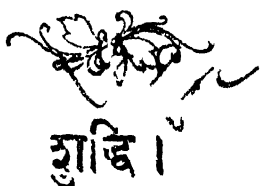
शुद्धि।

सन् १९२१ की मनुष्य गणना में मालूम हुआ कि गत १० वर्षों में हिन्दू जाति की संख्या ६० लाख कम हो गई है। जहां देश की अन्य जातियों अर्थात् ईसाई मुसलमानों की संख्या में यथेष्ट बढ़ती हुई वहां हिंदुओं की इस भीषण घटती को देखकर हिन्दू जाति के कुछेक दूरदर्शी और सच्चे हितैषी नेताओं को गहरी चिंता उत्पन्न हुई। हिन्दुओं के सन्तानें तो अवश्य पैदा होती हैं फिर यह घटती कैसे हुई। सोच विचार कर देखने वालों ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा कि हिंदुओं के अनेक पुरुष और स्त्रियाँ धड़ाधड़ मुसलमान और ईसाई बनाए जा रहे हैं। अब क्या किया जावे। ज़रा ज़रा सा अपराध करने पर हिंदु समाज अपने भाइयों को निकाल करके फेंक देता है। इतना ही नहीं किन्तु कभी कभी तो हिंदु समाज धर्म का आचरण करने वालों को भी उनके धर्माचरण के कारण ही

जाति च्युत कर दिया है, जैसाकि दीवाली पर जुआ न खेलने के कारण, विवाह पर मद्य मांस का प्रयोग न करने के कारण, दुर्गा पूजा तथा इसी प्रकार के अन्य त्योहारों पर पशु वध रोकने का प्रयत्न करनेके कारण अनेक सज्जन अपनी बिरादरि-यों से निकाले जा चुके हैं. ऊंची जाति के कहाने वालों में से अगर किसी ने जानबूझ कर या अज्ञान से किसी नीच जात कहलाने वाले के हाथ का अथवा ईसाई मुसलमान के हाथका कभी भोजन कर लिया तो वह जाति च्युत हो जाता है और ईसाई मुसलमानों में आ मिलता है,तथा इसी प्रकार के सैकड़ों द्वार हैं कि जिनसे हिन्दू लोग स्वयं अपने भाइयों को विधर्मी बनाते आरहे हैं, और ऐसा मार्ग एक भी नहीं दीखता कि जिस से विधर्मी भी हिन्दु बन सके। हिन्दू जाति को अतिसार और वमन की बीमारी है तथा भोजन के और पर वह मुंहसे एक भी ग्रास नहीं लेती, तो यह भीषण बीमारी से ग्रस्त जाति कितने दिन जीवित रहेगी। इस गम्भीर समस्या ने कुछ काल तक हिन्दू जाति के नेताओं को किं कर्तव्य विमूढ़ बनाये रक्खा।

सत्य सनातन वैदिक धर्म को मानने वाला आर्य समाज लगभग ५० वर्ष से इस रोग का इलाज जानता था और न मालूम कितने मुसलमान और ईसाइयों में मिले हुवे हिन्दू भाइयों को फिर से हिन्दू बना चुका था। इतनाही नहीं किन्तु अनेक ऐसे मुसलमानों और ईसाइयों को भी हिन्दू बना,

चुका था और अपने तथा अपने पूर्वपुरुषों के ... अ ... से मुसलमान व ईसाई ही सामने आते थे। इस गाढ़े समय में समझदार नेता लोगों को आर्य समाज की याद आई, और कि कर्तव्य विमूढ़ता दूर होने पर जनता ने फिर से प्रयत्न आरम्भ किया। महर्षि दयानन्द के सत्सङ्ग और सदुपदेशों द्वारा अपने महान् आत्मा को निर्मल और प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले, आर्य समाज तथा हिन्दू समाज के एक माननीय ... नेता श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इस सत्तर वर्ष की वृद्धावस्था में, अपने महान् अनुभव, विलक्षण कार्य शक्ति, अदम्य उत्साह, और महान् साहस, द्वारा एक महापुरुष की तरह, सबसे पहिले शुद्धि और हिन्दू सङ्गठन का सिंहनाद तमाम हिंदु जाति में गुँजा दिया। त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी तथा वास्तविक आदर्श ब्राह्मण माननीय श्री पण्डित मदनमोहन मालवीय जी ने अपने स्वास्थ्य तथा अन्य शारीरिक कष्टों की परवाह न करके हिन्दू जाति के सच्चे हितैषियों की तरह शुद्धि और सङ्गठन के लिए जो महान प्रयत्न किया वह जाति के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। इन्हीं तीनों महानुभावों की कोशिशों का यह परिणाम हुआ कि तमाम हिन्दु जाति में शुद्धि सङ्गठन की धूम मच गई। बड़े भारी बहुमत से सब हिन्दुओं ने शुद्धि को अपना लिया वह शुद्धि जो केवल लाख दो लाख आर्य समाजियों की वस्तु समझी जाती थी, बाईस करोड़ हिन्दुमात्र की अत्यन्त प्रिय

वस्तु हो गई। हजारों लोग जो मलकाने मुसलमान कहलाते थे, बड़ी प्रसन्नता पूर्वक शुद्ध होकर आर्य जाति (हिन्दू) में फिर से वापस आ गए, और बहादुर क्षत्रियों ने उन्हें सब तरह से मिला लिया। इससे बढ़ कर आर्य जाति (हिन्दू) के सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है।

प्रश्न-हमने तो सुना है कि हिन्दू धर्म शास्त्रों में विधर्मियों को शुद्ध करके फिर से हिन्दू बनाने का कहीं ज़िक्र नहीं है। कई लोग कहते हैं कि आर्य समाजियों ने यह प्रथा ईसाइयों से सीखी और उन्हीं के द्वारा फिर तमाम हिंदू समाज में शुद्धि की लहर फैल गई। इस विषय में आप की क्या सम्मति है।

उत्तर-यह सब बातें बिलकुल गलत हैं। जिन लोगों को शुद्धि के द्वारा आर्य जाति की इस संख्या वृद्धि से भय लगता है, जिनमें मुसलमान ही सर्व प्रथम हैं, वही ऐसी झूठी बातों से भोले भाले हिन्दुओं को बहकाया करते हैं। संस्कृत शास्त्रों में सैकड़ों बार शुद्धि करने की आज्ञा है, आर्य जाति हजारों वर्षों से विदेशियों और विधर्मियों को शुद्ध करके अपने में मिलाती रही है। देखिए:——

षष्ठान्न कालता मासं संहिता जप एव वा।
होमाश्च सकलाः नित्यमपाङ्क्त्यानां विशोधनम्। मनु०
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
एक रात्रोपवासश्च कृच्छ्रम् सान्तपनं मतम्। मनु ११-२१२

यतात्मनोऽप्रमत्तस्य द्वादशाहमभोजनम्।
पराको नाम कृच्छ्रोयं सर्वपापापनोदनः। मनु ११-२१५
अनुक्तनिष्कृतीनान्तु पापानामपनुत्तये।
शक्तिं चावेक्ष्य पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत्। मनु ११-२०७
ख्यापनेनानुतापेन तपसाऽध्ययनेन च।
पापकृन्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि। मनु ११-२२७
कृत्वा पापंहि सन्तप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते।
नैवं कुर्यां पुनरिति निवृत्या पूयतेतुसः। मनु ११-२३०
यथा महाह्रदं प्राप्य क्षिप्तं लोष्टं निमज्जति,
तथा दुश्चरितं पापं त्राने वेदे विनश्यति। मनु ११ २६३

मनु महाराज आज्ञा देते हैं कि आर्य जाति ने 'जिनको किसी कारणसे अपनी जाति से निकाल दिया है तथा विधर्मी होकर जिन्होंने अनेक दुष्कर्म किए हैं और जिनके साथ आर्यों ने खाना पीना आदि भी बंद कर दिया है, उन विधर्मियों को शुद्धि निम्न लिखित विधियों में से किसी एक के द्वारा अवश्य कर डालनी चाहिये।

(१) वह लोग महीने भर दो दो दिन उपवास करके तीसरे दिन भोजन किया करें।
(२) वह लोग वेद मन्त्रों का जाप करें।
(३) हवन करें।
(४) गोमूत्र, गोमय, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत और कुशा से मिला हुआ पानी पी लेवें।

(५) एक दिनरात का उपवास करें।

(६) पश्चात्ताप पूर्वक १२ दिन का उपवास करने से सभी पापों को नाश किया जा सकता है।

इतनाही नहीं, मनु महाराज यह भी लिखते हैं कि अगर किसी पाप की शुद्धि का वर्णन मनुस्मृति में न आया हो तो विद्वान् लोगों को चाहिये कि देश काल पात्र तथा पाप को देख कर स्वयं उसका प्रायश्चित्त तथा शुद्धि का तरीका नियत करलें। शायद इसी लिये शंकराचार्य ने नास्तिक लोगों की अगणित संख्या को शुद्ध किया था, और शुद्धि की तरकीब यह प्रयोग की थी कि जो कोई एक बार भी शङ्ख की आवाज़ को सुन ले वह शुद्ध आर्य हो जावे।

आगे चल कर मनु महाराज लिखते हैं कि कुछ और भी शुद्धि के तरीके हैं।

(१) वह आदमी भरी सभा में अपनी भूल स्वीकार करके दिल से शोक प्रकाशित करे।

(२) पश्चात्ताप करे।

(३) तपस्या करे।

(४) वेदों का अध्ययन करे।

(५) दान दे।

(६) अपने को धिक्कारे और प्रतिज्ञा करे कि मैं फिर कभी ऐसा कार्य जीवन पर्यन्त नहीं करूँगा।

(७) जिस प्रकार मिट्टी का ढेला जल में पड़कर घुल जाता है, इसी प्रकार वेदों का पाठ लेने से पापी और विधर्मी के भी पाप दूर हो जाते हैं।

बस आर्य जातिका भला चाहने वालोंका परम कर्तव्य है कि शास्त्र और स्मृतियोंकी आज्ञा मानें। किसीके बहकाने में मत आवें। अगर किसी भाई व बहिन से कोई पाप हो जावे तो उनको शिक्षा दें और समझा बुझा दें तथा पूर्व लिखित विधियों में से किसी के द्वारा उसकी शुद्धि करलें, कभी उसे आर्य जाति से बाहर न निकलने दें। और जो लोग अपनी जाति को छोड़ कर चले गये हैं उन्हें भी पूर्वोक्त विधियों में से किसी एक के द्वारा शुद्ध करके सब तरह अपनी आर्य जातिमें अवश्य मिला लें। जो ईसाई व मुसलमान अपने को सदा से ही विधर्मियों की सन्तान मानते आये हैं तथा अब अपने दिल से चाहते हों कि हम हिन्दू हो जावें, उदार हिन्दु जाति को चाहिये कि उनकी शुद्धि करके बड़े स्वागत के साथ उन्हें हिंदु बनालें। इसी में आर्य जातिका जीवन और वेदों शास्त्रों तथा गौ माता की रक्षा है।

देखिये, प्राचीन काल में सहस्रों विधर्मियों और म्लेच्छों को शुद्ध करके आर्य लोगों ने अपने में मिला लिया था।

त्वं कुरु संस्कृत भाषां म्लेच्छांस्त्वं मोहयेः शीघ्रम्।
तदा प्रसन्न सा देवी काश्यपस्य सुमानसे ॥ ११ ॥
वासं कृत्वा वधौ ज्ञानं मिश्र देशं मुनिर्गतः।

सर्वान् म्लेच्छान् मोहयित्वा कृत्वा तांश्च द्विजन्मनः ॥१२॥
संख्यां दश सहस्रञ्च नवृन्दानां द्विजन्मनाम् ।
द्विसहस्रम् स्मृता वैश्याः शेषाः शूद्र सुताः स्मृताः ॥ १३ ॥
तैः सार्धं मार्य देशे सः सरस्वत्याः प्रसादतः ।
अवसद्धै मुनि श्रेष्ठो मुनिकार्यरतः सदा ॥ १४ ॥
तेषा मार्य समूहानां देव्याश्च वरदानतः ।
वृद्धिर्बभूव बहुला नर कोटि चतुस्त्रयः ॥ १५ ॥
तेषां पुत्राश्च पौत्राश्च बभूवुः काश्यपो मुनिः ।
विंशोत्तरशतं राज्यं तस्य वर्षे प्रकीर्तितम् । १६ ॥
राजपुत्राख्य देशेश शूद्राश्चाष्ट सहस्रकाः ।
तेषां भूपश्चार्य पृथुः तस्माज्जातः स मागधः ॥ १७ ॥
भविष्य पुराण प्र० अ० प ९ ।

यह भविष्य पुराण के श्लोक हैं । महर्षि कश्यप ने सरस्वती अर्थात् विद्या देवी की उपासना की कि हे देवि मैं तेरे प्रसाद से संस्कृत भाषा के द्वारा तमाम म्लेच्छ लोगों को शीघ्र ही मोहित कर सकूं । सरस्वती उन पर प्रसन्न हुई और अपना कार्य पूरा करने के लिये महर्षि कश्यप मिश्र देश को गए (आज कल की तरह यदि भारत की चार दीवारी के बाहर न निकलने की कुप्रथा उस समय भी होती तो बहुत बड़ा समुद्र पार करके अफ्रीका के प्रसिद्ध देश मिश्र व Egypt में ऋषि लोग कैसे जाते, अतः साफ प्रतीत होता है कि ऐसे २ ढोंग उस समय प्रचलित न थे) उसने वहाँ के सब निवासि

यों को अपनी शिक्षा द्वारा मोहित करलिया और सब म्लेच्छों को द्विज बना लिया। सब को शुद्ध करके महर्षि कश्यप ने १0000 ब्राह्मण और क्षत्रिय बनाये, २०० को वैश्य का पद दिया तथा अन्य हज़ारों को शूद्र बनाया। इस प्रकार आर्य जाति की संख्या में करोड़ों की वृद्धि हुई।

इन्हीं महर्षि कश्यप ने राज पुत्र देश (राजपूताना) में बाहर से लाकर शुद्ध करके ८००० शूद्रों को बसाया, उन्ही में से राजा पृथु उनके राजा हुये और उन्ही में से राजा मागध हुये। अब भला बताइये कि शुद्धि की चाल नई है कि पुरानी। कौन कह सकता है कि आर्य समाजियों ने यह प्रथा ईसाइयों से सीखी और हिन्दू धर्म पहले कभी विधर्मियों को शुद्ध नहीं करता था। अरे भाई ईसाइयोंकी बात तो जाने दो, जब ईसा भी पैदा न हुये थे, उस समय का ये इतिहास है ईसा के पैदा होने से भी सैकड़ों वर्ष पहिले आर्य लोग समुद्र पार देश विदेश जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करते थे, विधर्मी लोगों को शुद्ध करते थे और हजारों लाखों की संख्या में शुद्ध करते थे, तथा वेद पढ़ा कर उन्हें ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य शूद्र बनाते थे, आर्य बनाते थे। उन्हें म्लेच्छ नहीं रहने देते थे और देखिए:—

सरस्वत्याज्ञया कण्वो मिश्र देशमुपाययौ।
म्लेच्छान् संस्कृतमाभाष्य तदा दश सहस्रकान्॥
वशीकृत्य स्वयं प्राप्तो ब्रह्मावर्तमिहोत्तमम्।

ते सर्वे तपसा देवीं तुष्टुवुश्च सरस्वतीम् ॥
कास वृत्ति कराः सर्वे बभूवुश्च बहुप्रजाः ।
द्विसहस्रास्तदा तेषां मध्य वैश्याः बभूविरे ॥
म्लेच्छा वभूविरे बौद्धा स्तथान्ये वेदतत्पराः ।
सरस्वत्याः प्रभावेण आर्यास्ते बहवोऽभवन् ॥
भविष्य पु० प्रतिसर्ग पर्व ख, ४, भा २१
यह भी भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व के श्लोक हैं ।

सरस्वती की आज्ञा से महर्षि कण्व एक समय में मिश्र देश, जिसे मिसर या Egypt भी कहते हैं,को गए वहां उन्हों ने संस्कृत भाषा और विद्या के आश्रय से १००३० म्लेच्छ मिश्र मों लोगोंको शुद्ध किया और उनको आर्य बनाया । उन सबको अपने साथ में आर्यावर्त लाये । धीरे २ वह सब संस्कृत के विद्वान् पण्डित होने लगे । उनमें से कुछ ने यहां खेती का पेशा कर लिया । सबने अपने २ गुण कर्मानुसार वर्ण प्राप्त किये, जिनमें से २००० तो वैश्य बन गये और सब लोग सुख पूर्वक रहते रहे । फिर जब इस देश में वेदों का प्रचार कम हो गया तब उनमेंसे कुछेक फिरसे म्लेच्छ हो गये, कुछ ने वेदविरुद्ध बौद्धमत स्वीकार कर लिया परन्तु बहुत से अन्त तक आर्य ही बने रहे ।

अब इन दो बड़े २ उदाहरणों से स्पष्ट है कि शुद्धि प्राचीन कालसे चली आती है । प्राचीन वैदिक धर्म वास्तवमें प्रचारात्मक (Missionary) धर्म था, और पहिले भी हजारों

लाखों विधर्मी और और विदेशी शुद्ध करके आर्य बनाये जा चुके हैं।

अब इस समय आर्य सन्तान (हिन्दूजाति) का क्या कर्तव्य है। हम सबको हृदय की संकीर्णता दूर करनी पड़ेगी, अपने बिछुड़े हुये भाइयों को मिलाना पड़ेगा। सच पूछिये तो हजारों लाखों विधर्मी आज भी हिन्दू जातिमें आनेको तय्यार हैं। परन्तु वह क्यों नहीं आते। हिन्दू जाति ही उन्हें मिलाने को तैयार नहीं हैं। क्या यह धोखे बाज़ी नहीं है किमुसलमान ईसाई तो सच्चे दिल से आपके पास शुद्ध होनें को आवें और हवन द्वारा सचमुच अपने को शुद्ध समझें, परन्तु उनके हाथ की बांटी हुई मिठाई तक को आप खाने में संकोच करें। हिन्दू जाति के सब बड़े २ नेताओं ने, हिन्दू महा सभा ने, सनातन धर्म महा मण्डलने, तथा इसी प्रकार की अन्य उत्तरदायित्व पूर्ण संस्थाओं के मुक्त कण्ठसे शुद्धि की आज्ञा दी है तिस पर भी जो हिन्दू महाशय शुद्ध होने वालों के साथ खाने पीने का खुला व्यवहार नहीं करते वह अपने नेताओं, महासभा, और महामण्डल की आज्ञाओं की घोर अवहेलना कररहे हैं। तथा हिंदू जाति की वृद्धि में रुकावट डालकर महा पाप के भागी हो रहे हैं। एक बात और देखिये, मुसलमान और ईसाई शुद्ध हो कर अपनी २ बिरादरियों को छोड़ देता है। अब हिन्दुओं में कौन सी बिरादरी है जो उनके लड़के लड़कियों के विवाह का प्रबन्ध करे, क्या हिंदू जाति ने यह समझ लिया है कि

जो लोग शुद्ध होकर हिन्दू बनते हैं वह सब भीष्मपितामहकी तरह आजन्म ब्रह्मचारी रहेंगे। एक महाशय बोले की शुद्ध होने वालों को शूद्र बनाया जावे और शूद्रों में उनके विवाह आदिका प्रबन्ध किया जावे। बहुत ठीक साहब, शायद आप के इसी निमंत्रण पर तो ईसाई मुसलमान लोग हिंदू बनने के लिए टूटे पड़ रहे हैं। क्या एक M.A, पास मुसलमान व ईसाई युवक केवल एक अनपढ़ अशिक्षिता शूद्र लड़की से ही विवाह करने के लिए अथवा एक अशिक्षित शूद्र को अपनी लड़की देने के ही लिए हिन्दू बनेगा। जब आप उनको अपनी जाति में निमन्त्रण दे रहे हैं तो पहिले उनके लिए रोटी बेटी का तो प्रबन्ध कर लीजिए। अन्यथा निमन्त्रण किस बिरते पर। सुना है कि "मुसलमानी राज्य" काल में युवराज दाराशिकोह ने तथा सम्राट अकबर ने उस समय के हिंदू पण्डितों से प्रार्थना की थी कि हम हिंदू बनना चाहते हैं, हमें इसलाम पर विश्वास नहीं, हमें हिंदू बना लो, पर यहां तो दरवाज़ा बंद था। हज़ारों लाखों करोड़ों हिंदुओं को मुसलमान बना लो पर अकबर तथा दाराशिकोह को उन्हीं की प्रार्थना पर भी हिंदू नहीं बनाया गया। यदि कहीं उस समय के पण्डित लोग उनको हिंदु बना लेते तो शायद आज इतनी गोहत्या न हो रही होती, शायद हिंदू जाति की ऐसी बुरी हालत न होने पाती, और सम्भव है कि औरङ्गजेब जैसे अत्याचारी का जन्म ही न होने पाता। यह तो बड़ा विस्मय है कि मुसल-

मानों और ईसाइयों को बहुत बड़ी संख्या में शुद्ध कर सकने के लिए पहिले हमें अपनी जाति में से इस खाने पीने की फ़ितूरी तथा व्यर्थ की छूत छात को बिलकुल छोड़ना पड़ेगा, जन्मके आधार पर बनी हुई इन हज़ारों जातों-पातों तथा अनगिनत बिरादरियों को सर्वथा उड़ा देना होगा, तथा किसी को अछूत न समझ कर सबको अपना भाई मानना होगा। तभी हम लोग हजारों लाखों और करोड़ों मुसलमान ईसाइयों को शुद्ध करके अपने भीतर हज़म कर सकेंगे। परमात्मा कृपा करें कि दुर्नीतियों की शकल में स्वार्थियों द्वारा प्रवर्तित कोई ढोंग हमारी जाति को अब अधिक न सता सके।

बड़े २ समझदार लोगों का इसलाम और ईसाइयत पर से विश्वास उठता जा रहा है। टर्की में से खलीफ़ा निकाल दिया गया, पर्दे की तथा बहु विवाह की कुप्रथाओं को तोड़ कर सच पूछो तो बहादुर तुर्क लोगों ने इसलाम को अनावश्यक और हानिकारक सिद्ध कर दिया है। प्रसिद्ध योरोपियन विद्वान मिस्टर एम० एन० पिकल (M.N. Pikle) ने लिखा है कि इसलाम और ईसाइयत ने दुनियां को शांति नहीं दी, दुनियां शांतिके लिए तड़पतीहुई इधरउधर दौड़रही है,दुनियां को विश्वास है कि हिंदू धर्म उन सबको शांति देगा (World is crying for Hinduism, but Hindus don't care at all) वह लिखते हैं कि "दुनियां आर्य धर्मकी प्यासी है पर हिंदू कुछ भी परवाह किसी की नहीं करते।" सचमुच दुनियां हमारे

धर्म के लिए टूटी पड़ती है पर हमारेही कुछेक भाई दुनियां को हिन्दू बनने से रोके हुए हैं।

देखिये बहादुर क्षत्रिय लोगों ने मलकाना राजपूतों के लिए स्वागत का द्वार खोल दिया था, उन्होंने मलकाना राजपूतों की मिठाई खाई, पूरी खाई, रोटी खाई और सैकड़ों विवाह बात की बात में शुद्ध हुये हुओं के साथ में हो गए। यहाँ रास्ता खुला था; मक्कारी और ढोंग नहीं था, इस लिए हजारों मलकाना राजपूत टिड्डीदल की तरह शुद्ध होने को जमा हो गए और इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि वे सब आज बहादुर क्षत्रिय राजपूत सरदार बन गए हैं।

हम जानते हैं कि जिनको हिन्दू जाति की वृद्धि अभीष्ट नहीं वे ईसाई मुसलमान लोग इस पवित्र शुद्धि व्यवस्था का विरोध अब भी कर रहे हैं और भविष्य में भी करेंगे परन्तु यदि हम किसी की परवाह न करके शुद्धि के काम को सच्चाई और दृढ़ता से करें तो संसार की कोई शक्ति हमें रोक नहीं सकती। शुद्धि के सम्बन्ध में आज कल निम्न लिखित बातें प्रत्येक हिन्दू को अत्यन्त ध्यान देने तथा अमल में लाने योग्य हैं।

(१) प्रत्येक हिन्दू जब किसी मुसलमान व ईसाई से मिले तो बड़े प्रेम और भ्रातृभाव के साथ उसे इस सनातन वैदिक धर्म का महत्व समझावे।

(२) उनको बतलावें कि देखो सम्राट् अकबर तथा दारा-शिकोह जैसे मुसल्मान भी किस प्रकार से दिलोजान से हिन्दुधर्म के गौरव को मानते थे।

(३) बाइबिल और कुरान की असम्भव कथाओं के प्रभाव को वेदों और सत्य शास्त्रों की वैज्ञानिक सच्चाइयां सुना कर उनके दिलों से निकाल दें।

(४) अपने दया और प्रेमपूर्ण व्यवहार से ईसाई मुसलमानों के दिलों को जीनलें, ताकि वे इसलाम और ईसाइयत के खोखले-पन को तथा वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करें।

(५) शुद्ध होकर हिंदु बनने के लिये सदा उनसे प्रेमपूर्वक प्रबल अनुरोध किया करें।

(६) ऊपर जो शुद्ध करने की विधियां लिखी हैं उन में से किसी से उन्हें शुद्ध करने में तनिक भी हिचकिचाहट व विलम्ब मत करें। विधर्मियोंको शुद्ध करना इस समय हमारा सबसे मुख्य कर्तव्य है।

(७) शुद्ध करने के पश्चात् सब लोग उसके हाथ का बांटा हुआ अन्न आदि खावें। संस्कार करवाने वालों और दर्शक महाशयों को चाहिये कि उसके सामने ही उसकी बांटी हुई वस्तु को अवश्य खा कर उसका उत्साह बढ़ावें।

(८) यज्ञोपवीत को प्राचीन शास्त्रकारों ने विद्या पढ़ने वाले आर्यों का चिन्ह माना है, इस लिये जो शुद्ध होने

से पहिले ही कुछ लिखे पढ़े हों, उन्हें शुद्धि के साथ २ यज्ञोपवीत अवश्य देना चाहिये, तथा जो बाद में पढ़ने लगें उन्हें भी विद्या पढ़ाना आरम्भ करते ही यज्ञोपवीत दे देना चाहिये। क्योंकि वेदों और शास्त्रों की आज्ञानुसार यज्ञोपवीत का अधिकार अनपढ़ लोगों को छोड़ कर शेष सब मनुष्यों को है।

(९) शुद्ध हुये हुओं के साथ छूतछात आदि के भाव बिल्कुल हटा दिये जावें, खाना पीना सबका एकसा और इकट्ठा होना चाहिये। उनके गुण कर्मानुसार उनको ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, समझना और कहना चाहिये।

(१०) उनके गुणकर्म के अनुसार ही गुणकर्म रखने वाले लड़के लड़कियों से उनके विवाह का प्रबन्ध किया जावे तथा जातपात और छोटी २ बिरादरियों का कोई बखेड़ा उनके साथ न लगाया जावे।

(११) उनके लिये विद्या के सब मार्ग खुले रहें और उनके साथ इस प्रकार का उत्तम व्योहार हो जिससे वह फिर कभी विधर्मी न होना चाहें।

यदि यह सब बातें तथा इसी प्रकार की अन्य अनेक विधियां हिन्दू लोग धैर्य और उत्साह से काममें लावेंगे तो अवश्यही एक दिन तमाम संसार जैसा पहिले आर्य था वैसाही फिर भी आर्य हो जायगा।

हिन्दू सङ्गठन

प्रेम भ्रातृभाव और समानता यही तीन सूत्र हैं जि॰
किसी समाजके सब व्यक्ति परस्पर सम्बद्ध औरसंगठित रहत
हैं। हजारों जात पातों ने, हजारों विरादरियों ने और सब से
अधिक तो "छूत अछूत" के विकट प्रश्न ने इन सूत्रों को तोड़
कर हमारी जाति के व्यक्तियोंको एक दूसरेसे सर्वथा अलग र
कर दिया है। ३ [illegible] भी दलित भाइयों को अपने बराबर ह
सब ? धिकार न [illegible] ऐ हिंदु महानुभाव अपनी तमाम हिंदू
जाति को भारी खत [illegible] में डाल रहे हैं। हमारा परम कर्तव्य है
कि हम इन सात क [illegible] अछूत हिंदुओं को सब अधिकार
अपने बराबर देकर इन्हें ईसाई और मुसलमानों के चुंगुल में
फंसने से बचावें ॥

दूसरों को अछूत और नीचा समझने वाले महानुभावों
को चाहिये कि इस विषयमें निम्न लिखित दो पत्रोंको ध्यानसे
पढ़ें, तब यह स्पष्ट हो जावेगा कि इस ऊंच नीच भाव के
कारण हिंदु जाति को कितना नुकसान हो रहा है।

पहला पत्र श्रीयुत महाशय [illegible]ताराम जी का है जो
रविदास कुरैल सभा कानपुर के प्रधान हैं। वह लिखते हैं,
"प्यारे हिंदू तथा छूत भाइयो ? आप लोग हम अछूत भाइयों
के पीछे क्यों पड़े हुए हैं। हम लोग किसी प्रकार आपकी सेवा
करते हुए अपने घर में अपने कुसमय के दिन बिता रहे हैं,
परन्तु आप लोग हमें चैन नहीं लेने देते। कहीं तो आप लोग

अपनी सभाओं में अछूतोद्धार के व्याख्यान दे देकर हम लोगों को क्षणिक उत्साहित करते हैं,और जब हमलोग आपकीचालों में आकर आपके मंदिरों में जाने को उद्यत होतेहैं तब आपलोग मंदिरोंके फाटक बंद करके अथवा हमलोगों को पिटवानेके लिए लट्ठबंदी की तैयारियाँ करके बैठे टाले में हम लोगों की मान-हानि किया करते हैं। एक तो हम वैसेही आपके हिंदू धर्म से हट आ गए हैं, और आप लोग हेटे दैठाये ही हम लोगो को अपमानित करके और भी अधिक दलित कररहे हैं। बाज़ आये हम आपके मन्दिरों और उन मूर्तियों से जिनके देखने के लालच में हम लोग अपमान की चक्की में रगड़े जाते हैं। हम लोग हिंदू धर्म से पृथक् किसी विचित्र धर्म का अवलम्बन करेंगे, और जिस प्रकार ६॥ करोड़ मुसलमान आप से जुदे हैं इसी प्रकार हम लोग भी सात करोड़ आपसे जुदेही हो कर रहेंगे। अब आप क्षमा कीजिये और हमारे पीछे न पड़िए,हमें यों ही रहने दीजिए। जब हम मन्दिरों के भीतर नहीं घुसने पाते तो वैकुंठ के भीतर कैसे घुसने पावेंगे। हम लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें अपनी गोद में लें, अब हम मन्दिरों में नहीं जाना चाहते। और आप छूत भाइयों से यही निवेदन है कि अब हम से सहानुभूति करना छोड़ दीजिए आशा है हमारे इन विनीत शब्दों पर हमारे हिन्दू तथा छूत भाई एवं ध्यान देने का कष्ट उठावेंगे।

सीताराम प्रधान, रविदास कुरिल सुधार सभा, कानपुर।

दूसरा पत्र एक (Welcome Address) है जो कि गत नवम्बर मास में फतेहगढ़ के कलक्टर और मेजिस्ट्रेट मिस्टर ए० पी० कोलैट (A. P. Collett. I. C. S,) को संयुक्त प्रांतीय अछूत सभा की तरफ से दिया गया था। इस अभिनन्दन पत्र में अन्य अनेक बातों के साथ दलित भाइयों ने कहा है कि "हम हिन्दुओं के अत्याचारों को अधिक नहीं सह सकते, और अब हम हिंदुओं ईसाइयों मुसलमानों तीनों से ही पूर्णतया पृथक् होना चाहते हैं क्योंकि इसी में हमारा भला है"। हम इन पत्रों के लिखने वालों से क्या कहें। यह तो होना ही था, ऐसा होना स्वाभाविक और अनिवार्य था। अपने को बड़ा पवित्र और ऊँचा कहने वाले हिंदुओं का ही सब दोष है। इसमें दलित भाइयों का कोई दोष नहीं। क्या वह लोग आदमी नहीं हैं, आप लोगों ने उनके साथ मनुष्यता का व्यवहार नहीं किया, आखिर वे कब तक सहते, अत्याचार सहने की भी कुछ सीमा होती है। इस समय वे डङ्के की चोट के साथ अपने आपको हिंदू जाति से पृथक् करने की घोषणा कर रहे हैं हम पूछते हैं कि अपने को ऊँचा मानने वालों का मिथ्याभिमान अब कितने दिन चलेगा। अब यह ढोंग नहीं चल सकता। सबको समान समझना पड़ेगा। यह पाप हम ऊँची जाति के कहाने वाले हिंदुओं ने किया है कि सात करोड़ अपने भाइयों को अछूत समझ कर छोड़ दिया। उसका फल तमाम जाति भोग रही है। हिंदू सङ्गठनमें सबसे बड़ी बाधा यही पड़ रही है। हम लोगोंमें मिथ्याभिमान और

ढोंग इतना बढ़ा है कि हम दूसरे के साथ बैठना भी पसन्द नहीं करते। सङ्गठन की और बातें तो पीछे होंगी, पहिले हम हिंदू लोग इकट्ठे बैठना तो सीखें। अगर एक भङ्गी व चमार कहलाने वाले से किसी ऊंची जाति वाले का कपड़ा छू गया तो सारा धर्म उड़ जाता है, तब कैसे एक दरीपर बैठकर हिन्दू लोग अपनी उन्नति के उपाय सोचेंगे। जिन बड़े मंदिरों में दलित भाइयों को घुसने तक नहीं दिया जाता, अगर कभी इन पर मुसलमानों ने आक्रमण किया तो क्या कभी बुलाने से भी दलित भाई इनकी रक्षा करने को आवेंगे। भला जब तक हिन्दू लोग दलित भाइयों को अछूत समझते रहेंगे और दबाए रक्खेंगे तब तक यह सात करोड़ क्या हिंदू राज्य की इच्छा भी कभी कर सकते हैं। यह लोग तो सदा ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि भगवान् भारतवर्ष में हिंदू राज्य कभी न हो। क्योंकि अभी तो हम जैसे हैं तैसे हैं ही, किन्तु हिंदू राज्य में तो हम लोग राज नियमों द्वारा कुचल दिए जावेंगे।

तमाम हिंदू जाति अनगिनत जात पातों और बिराद-रियों में फटी हुई है। न हम इकट्ठे बैठ सकते हैं, न इकट्ठे चल फिर सकते हैं, न इकट्ठे खा पी सकते हैं। सबकी ढाई चावल की खिचड़ी अलग २ पकती है, और सबकी ढपली अलग २ बजती है। इस अवस्था में संगठन कैसे हो? ऐसी असङ्गठित दशा में भला हम लोग उन मुसलमानों और ईसाइयों से किसी भी बात में बराबरी कर सकते हैं जहां उनके एक भाई पर आंच आतेही सैकड़ों लोग मरने मारने को

तैयार हो जाते हैं। हमें तो ढाई घर और साढ़े तीन घर तथा साढ़े चार घर के मारेही फुर्सत नहीं मिलती, हमारा सारा समय तो कच्ची पक्की रसोई की ही उलझनों में बीत जाता है फिर मुसल्मान ईसाइयों की पूर्ण सुसज्जित और सर्वथा सुसङ्गठित समाजों से अपने धर्म की रक्षा करने के उपाय हम कौन से वक्त में सोचें।

संसार में जीवित रह सकने के लिए हम सब हिंदुओं को पारस्परिक प्रेम सहानुभूति उदारता और भ्रातृभाव को आपस में बढ़ाना चाहिए।

प्रश्न-संगठन सम्बन्धी कुछ वेद मन्त्र पेश कीजिए।

(१) संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते। ऋग्वेद

(२) अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ॥ वेद ॥

(३) सहृदयं साम्मनस्यं अविद्वेषं कृणोमि वः
अन्योन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या। अथर्व०

(४) समानीप्रपा सह वो अन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि। सम्यञ्चोग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः॥ अथर्ववेद॥

(५) सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्संवननेन सर्वान्। देवाः इवामृतं रक्षमाणाः सायं प्रातः सौमनसो वो अस्तु॥ अथर्ववेद॥

यह सब वेद मंत्र हैं। परमात्मा आज्ञा देते हैं कि संगठन के लिए सब मनुष्यों को चाहिए कि "इकट्ठे चला करें, इकट्ठे बोला करें, एक समान विचार किया करें. जिस प्रकार समझदार लोग सदा प्रेम से रहते हैं,वैसेही सदा रहा करें।"

"ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा अन्य सब लोग भी एक परमात्मा के पुत्र होने से सगे भाई हैं। इनमें कोई छोटा नहीं है कोई बड़ा नहीं है, सब बिलकुल बराबर हैं।"

'हे मनुष्यो तुम सबके दिल मिले हुए हों, तुम्हारे मन मिले हुए रहें, तुममें कभी आपस में लड़ाई झगड़ा न हो. तुम सब एक दूसरे को ऐसा प्यार करो जैसे गौ अपने नये २ पैदा हुए बछड़े को प्यार करती है।"

"तुम सब इकट्ठे पानी पिया करो, इकट्ठे बैठकर भोजन खाया करो; इकट्ठे मिल कर बड़े २ काम किया करो, और प्रातः सायं इकट्ठे होकर सन्ध्या हवन किया करो।

"सबइकट्ठे ही रहा करो, मकान सबके एकसे हों, जिस प्रकारदेवता लोग अमृतकी रक्षा करतेहैं उसी प्रकारतुम एक दूसरे की रक्षा किया करो।"

बस यही संगठन के लिए मुख्य २ नियम हैं।

हिन्दू जाति को चाहिए कि संगठन के इन वैदिक नियमों के पालन के लिए अब निम्न लिखित परिवर्तन अपने सामाजिक जीवन में अवश्य करदें।

(१) कोई भी हिंदू अछूत न समझा जावे।

(२) दलित भाइयों को सब कुओं पर चढ़ने, पानी भरने

( )

... और ... करने का उतना पूरा अधिकार ... जितने दूसरे हिन्दुओं को है।

(३) ... सड़कों पर ... का भी उनको पूरा अधिकार हो, ... उनके रहने के मुहल्ले अलग न हों, किन्तु बस्ती में जहां चाहें वहां वह रह सकें।

(४) सब धर्म मन्दिरों में जाने का उनको पूरा अधिकार हो, अर्थात् मन्दिर में जाना, दर्शन करना, आरती उतारना, शंख बजाना, भजन व वेदमन्त्र पढ़ना, सन्ध्या हवन करना, कथा और उपदेश सुनना, तथा अन्य सब धार्मिक बातों में उनको ठीक उसी प्रकार पूरी स्वतंत्रता हो जैसी अन्य हिन्दुओं को है।

(५) उनके लिए विद्या के सब द्वार खुले रहें। अनपढ़ होने के कारण ही दलित भाई विधर्मियों के बहकावे में आ जाते हैं। यह लोग भी बड़ी खुशी से संस्कृत पढ़ सकें तथा सब शास्त्रों और वेदों के पण्डित हो सकें।

(६) यज्ञोपवीत विद्या का चिन्ह है; इस लिए यह लोग भी जब पढ़ना प्रारम्भ करें तो इनका यज्ञोपवीत सँस्कार कर दिया जावे और तबसे ये यज्ञोपवीत पहिना करें।

(७) प्रातः और सायंकाल सन्ध्या सब हिंदुओं की इकट्ठी हो, अर्थात् एक ऐसा समय तथा ऐसा स्थान नियत कर लिया जावे जहां छोटे बड़े का भेद छोड़ कर सब हिंदू दोनों समय इकट्ठे होकर ईश्वर की उपासना किया करें। हमारी समझ में मन्दिरों से अच्छी जगह

इस कार्य के लिये शहरोंमें मिलना मुश्किल है। यह बिल्कुल सत्य है कि नित्य इकट्ठे होकर ईश्वर प्रार्थना करने से परस्पर प्रेम बढ़ेगा और सँगठन दृढ़ होगा।

(८) ऐसे सहभोजों का प्रबन्ध जल्दी २ हुआ करे जहाँ अपने बनावटी सब भेदभावोंको भूल कर सब हिंदू मात्र-दलित भाई और शुद्ध हुये २ भाई भी-इकट्ठे बैठ कर भोजन किया करें। इन सहभोजों में फल मिठाई अथवा पूरी होनेसे बहुत लाभनहीं होता, इस लिये जहां तकहो सके रोटी दाल चावल आदि का ही प्रबन्ध करना चाहिए। प्रतिष्ठित और धनाढ्य हिन्दुओंको इस ओर ध्यान देना चाहिए। हिंदुमात्र को ऐसे सहभोजों में बड़ी से बड़ी संख्या में पहुंचना चाहिए।

(९.) हिंदुओं को बालविवाह की कुप्रथा को तोड़ कर जाति के बालकों में ब्रह्मचर्य का प्रचार करके उन्हें बलवान् विद्यावान् और उत्साही बनाना चाहिए।

ऐसे अखाड़े और ऐसी व्यायाम शालायें जगह जगह खुल जावें, जहां इकट्ठे होकर सबहिंदू मात्र (दलित भाई तथा शुद्ध हुए २ भाई भी) कुश्ती लड़ने तथा गतका लाठी पटा आदि चलाने का अभ्यास किया करें। इस तरह के अखाड़ों से जहां सब हिंदुओं में बल और बहादुरी आवेगी वहां परस्पर सहानुभूति करने और आपसमें एक दूसरे को सहायता देने का भी भाव सबमें जागृतहो जायगा ".सङ्गठीयं करतानहै" यह उपनि

यह वाक्य है कि हम सब इकट्ठे होकर कसरत किया करें और अपने शारीरिक बल वीर्य की वृद्धि करें।

(१०) हिन्दुओं को मदार व कबर आदि की पूजा न करनी चाहिये क्योंकि वह किसी भी पुराने शास्त्र में आज्ञा नहीं दी गई।

(११) हिन्दू स्त्रियों को मुसलमान चूड़ी वाले मनुष्यों से चूड़ी न पहरनी चाहिये। चूड़ी पहिनाने के लिए हिंदू स्त्रियां ही चूड़ी बेचने वाली हों तो सर्वोत्तम है।

(१२) विधवा विवाह की प्रथा शास्त्रसम्मत तथा युक्ति सङ्गत भी है। इस लिए वर और वधू दोनों की सलाह लेकर हिंदू बिरादरी में ही विधवाओं का विवाह कर देना उचित है। वह स्त्रियां प्रायः विधवा ही देखी गई हैं, कि जिन्हें हिन्दुओं ने अभागिन और राक्षसी कह कर निकाल दिया और ईसाई मुसलमानलोग उनको ले गए तथा उन्हें और उनकी भविष्यमें होने वाली सन्तानों को भी विधर्मी बना लिया। अभागिन और राक्षसी आदि शब्दों से अपमानित की गई विधवाओं ने ही रो रो कर हिन्दू जाति को शाप दिया है और उन्हीं देवियोंके शापों से आज हिंदू जाति भस्म होती आरही है।

(१३) इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि एक भी हिंदू पुरुष व स्त्री अथवा बालक किसी भी तरह से मुसलमान व ईसाइयों के चुंगल में न फँसने पावे।

(१४) देहली के निवासी मुसलमान नेता ख्वाजा हसन निजामी ने "दाइये इसलाम" नामी पुस्तक लिख कर मुसलमानों को अनेक प्रकार के हथकण्डे सिखाये हैं कि जिनके द्वारा सैकड़ों हजारों मुसलमान लोग सदा हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की फ़िकिर में घूमा करते हैं। हिंदुओं को चाहिए कि ऐसे लोगों से बचें और अपने अन्ध भाइयों को भी बचावें। भिखमँगों, रण्डियों और चूड़ी पहिराने वाली मनिहारिनियोंको भी ख्वाजा हसन निजामी ने उपदेश दिया है कि वह लोग भी हिंदुओं को मुसलमान बनाने में मदद दें। हिंदुओं को चाहिए कि वे इन हथकण्डों से बचें और विशेषतया अपने लड़कों लड़कियों तथा अन्य स्त्रियों को उन हथकण्डों से बचाने का सदा प्रयत्न करते रहें।

"अलार्म बेल व खतरे का घण्टा" इस नाम से "दाइये-इसलाम" का हिन्दी अनुवाद छप चुका है, उसके पढ़ने से पाठकों को मुसलमानों के हथकण्डों का विवरण मालूम हो जायगा। तब हिंदू लोग अपनी रक्षा भली प्रकार कर सकेंगे। हिन्दुओं को चाहिए कि जो तरीके हसन निजामी ने मुसलमानों को सिखाए हैं उनको समझें तथा उन तरीकोंमेंसेजोजायज़ तरीकेहों (क्योंकिबहुतसे तरीके नाजायज़ भी हैं) उनके द्वारा मुसलमानों को हिंदू बनाने का अवश्य मेव पूराप्रयत्न करें। इसी विषयमें पूज्यवर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने 'हिंदुओ खबरदार' नामकी एक पुस्तक उर्दू में लिखी है।

उर्दू जानने वाले हिन्दू महाशयों को उसे भी अवश्य पढ़ना तथा उससे लाभ उठाना चाहिए।

(१५) हिंदुओं को आपस में प्रेम तथा घनिष्ठता बढ़ानी चाहिए। वह प्रेम और घनिष्टता केवल अपनी २ बिरादरी तक ही सीमित न रहे किन्तु दलित भाइयों और शुद्ध हुए हुए हिन्दुओं तक भी पहुंचनी चाहिए। बिवाह आदि के शुभ अवसरों पर तथा मृत्यु आदि शोकावसरों पर हिंदुओं को अधिक संख्या में परस्पर मिलना चाहिए।

(१६) यदि गुण्डे मुसलमान किसी हिन्दू पर आक्रमण करें तो सब हिन्दुओं को तत्काल अपने भाई की सहायता के लिए पहुंचना चाहिए, अपने २ घरों में घुस कर न [illegible] चाहिए। मुलतान, सहारनपुर, आगरा, दिल्ली, इलाहाबाद, लखनऊ आदि की लड़ाइयों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि जहाँ २ हिन्दू लोग अलग अलग रहे हैं वहीं वहीं मुसलमान गुण्डों की जीत रही है। पर जहां जहां भी एक हिन्दू पर आक्रमण होते ही उसकी सहायता के लिए अनेक हिन्दू बहादुरी से आ डटे हैं, वहां पर मुसलमान गुण्डोंके दांत खट्टे कर दिए गए हैं।

(१७) महाराज रामचन्द्र, श्रीकृष्ण महाराज, प्रल्हाद, बुद्ध, कबीर दास, गुरू नानक, गुरू गोबिंद सिंह, बीर बर बंदा महाराणा प्रतापसिंह, महाराज शिवा जी, वीर हकीकत राय, समर्थ रामदास, महारानी सीता, रानी पद्मिनी,

तानाजी मालूसरे, महर्षि दयानन्द, आर्य पथिक लेखराम आदि २ महापुरुषों तथा देवियों के चरित्र सुना-सुना कर तथा इन सबकी धर्मनिष्ठा का मर्म समझा समझा-कर, हिन्दू बालकों और बालिकाओं को, हिन्दू पुरुषों और स्त्रियों को, हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिए सब तरह से तैयार करना चाहिये ।

(१८) शुद्धि और संगठन का काम हरेक हिन्दू को अत्यन्त उत्साह के साथ करना चाहिए। क्योंकि इस समय हमारी जाति के लिये यही दोनों काम अमृत तुल्य हैं ।

प्रश्न-पर कुछ मुसलमान लोग कहते हैं कि जब से शुद्धि और संगठन आन्दोलन चले हैं तभी से हिन्दू मुसलमानों में झगड़े बढ़ गये हैं । क्या यह दोष सच्चा है ।

उत्तर-हरगिज़ नहीं, यह दोष बिलकुल मिथ्या है । शुद्धि संगठन के आन्दोलनों ने हिन्दू मुसलमानों में दंगे नहीं करवाये, किन्तु अनेक मौलवियों के फतवा तथा बहकाने से ही गुण्डे मुसलमानों ने जहां तहां हिन्दुओं पर आक्रमण किये हैं। कुछ गुण्डे मुसलमान तो हमेशा ही झगड़ों का स्वागत करने को तैयार रहते हैं । अभी जो झगड़े गत दो वर्षों में हुये हैं उनका सारा दोष इसी प्रकार के मुसलमानों पर है, क्योंकि यह सब उन्ही की क्रियाओं का परिणाम था ।

जब असहयोग आन्दोलन पूरे वेग से चल रहा था और हिन्दू मुस्लिम एकता बिलकुल पक्की थी, तब

भी मुसलमान लोग हिंदुओं को मुसलमान बनाते ही थे, परन्तु अब अनेक मुसलमान महाशय चाहते हैं कि हम तो हिन्दुओं को धड़ाधड़ मुसलमान बनाया करें और हिन्दू लोग एक भी मुसलमान को हिन्दू न बना सकें, इसी लिये शुद्धि और संगठन आन्दोलनों का विरोध करते हैं। परन्तु चूँकि शुद्धि और संगठन आन्दोलन हिंदुओं ने अपनी आत्म रक्षा के लिये प्रारम्भ किये हैं और यह दोनों आन्दोलन सचाई पर अवलम्बित हैं अतः इनको कोई श[illegible] भी अब रोक नहीं सकती।

इस लिये "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" (अर्थात् सब संसार को आर्य बनाओ) इस वेद मंत्र के मानने वाली तमाम हिंदू जाति को चाहिए कि अपनी समाज में फैली हुई सैकड़ों कुप्रथाओं और ढोंगों तथा उलझनों को छोड़ कर, उदारता प्रेम और भ्रातृ भाव के पवित्र तरीकों से, तमाम अन्य मतावलम्बियों को फिर से आर्य बनाने के लिये शुद्धि संगठन के आंदोलनों में पूरा सहयोग दें। प्रत्येक काम करने से ही होता है, बिना किए कुछ भी नहीं होता। हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि परमात्मा उन्हीं पुरुषों की सहायता करते हैं जो पुरुष पहिले अपनी सहायता स्वयं करना सीख लेते हैं॥

पं० रामकृष्ण दीक्षित द्वारा 'रमा प्रेस' कानपुर में मुद्रित ।